डॉ. अर्जुन चव्हाण
(एम्.ए., बी. एड्., पीएच्.डी.)
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416004

संस्तुति पत्र

मैं संस्तुति करता हूँ कि "धर्मवीर भारती के 'अंधायुग' नाटक का कथ्य और शिल्प" इस लघु शोध-प्रबंध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए।

स्थान : कोल्हापुर

तिथि : 21 MAR 2007

21.03.2007

(डॉ. अर्जुन चव्हाण)

Head
Dept. of Hindi,
Shivaji University
Kolhapur-416004

डॉ. राजेंद्र मोतीचंद शहा
एम्.ए., एम्.फिल., पीएच्.डी.
प्राचार्य, मुधोजी महाविद्यालय,
फलटण, जि. सातारा.
(महाराष्ट्र)

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री. दत्तात्रय बाबुराव पतंगे ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध "धर्मवीर भारती के 'अंधायुग' नाटक का कथ्य और शिल्प'' मेरे मार्गदर्शन में पूरा किया है। यह उनकी मौलिक रचना है। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। प्रस्तुत शोध कार्य के लिए मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

स्थान : फलटण

तिथि : 18-3-2007

शोध-निर्देशक

(प्राचार्य डॉ. राजेंद्र शहा)

प्राचार्य
मुधोजी महाविद्यालय, फलटण.

प्रख्यापन

"धर्मवीर भारती के 'अंधायुग' नाटक का कथ्य और शिल्प" यह शोध-प्रबंध मेरी सर्वथा मौलिक रचना है। शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर (महाराष्ट्र) की एम्. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही हैं। यह रचना इससे पहले इस या अन्य किसी विश्वविद्यालय में किसी भी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थान : फलटण

तिथि : 18-3-2007

शोध-छात्र

(श्री दत्तात्रय बाबुराव पतंगे)

प्राक्कथन

प्रेरणा एवं विषय चयन :

नाटक साहित्य की ऐसी विधा है, जो मानव मस्तिष्क पर प्रभाव डालने में सर्वाधिक समर्थ होती हैं। साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा नाटक-विधा समाज के अधिक नजदीक है। नाटक विधा मानव जीवन की संवेदनाओं का साकार रूप प्रकट करता है।

एम्.ए. की पढ़ाई के दौरान विष्णु प्रभाकर जी का 'टूटते परिवेश' नाटक मैंने अभ्यासपूर्वक पढ़ा। तभी से नाटक विधा से मैं प्रभावित था। एम्.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद मेरे गुरूवर्य प्राचार्य श्री शहा सर जी ने मुझे एम्.फिल. करने के लिए प्रेरित किया। जब एम्.फिल. के लिए लघु-शोध-प्रबंध के विषय चयन के लिए मैं मेरे शोध-निदर्शक प्राचार्य डॉ. शहा सर जी से मिला, तब उन्होंने मुझे कुछ नाटकों की किताबें पढ़ने के लिए दी। उसमें से मुझे डॉ. धर्मवीर भारती का 'अंधायुग' नाटक अच्छा लगा उस नाटक के अध्ययन के उपरांत मैं फिर शहा सर जी से मिला तथा उनके साथ विचारपूर्वक चर्चा की। अंतत: मैंने यह महसूस किया कि डॉ. धर्मवीर भारती लिखित 'अंधायुग' पर कथ्य और शिल्प शीर्षक को लेकर कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। अत: डॉ. धर्मवीर भारती के 'अंधायुग' नाटक का 'कथ्य और शिल्प' पर लघु शोध कार्य करना निश्चित किया।

विषय का महत्व एंव उद्‌देश्य :

सबसे पहले मेरे सामने यह सवाल खड़ा हो गया था कि क्या अब तक किसी विद्वान ने इस विषय पर शोधकार्य किया है ? अभी तक 'अंधायुग' नाटक पर तथा साहित्यकार डॉ. धर्मवीर भारती जी पर अवश्य कार्य हुआ है, लेकिन 'अंधायुग' गीतिनाट्य का कथ्य और शिल्प इस विषय पर शोध-कार्य नहीं हुआ था। अत: मैंने शोध-निर्देशक प्राचार्य डॉ. शहा सर जी के मौलिक मार्गदर्शन के आधार पर लघु शोध प्रबंध लिखा।

उद्‌देश्य :

डॉ. धर्मवीर भारती के 'अंधायुग' इस गीतिनाट्य के कथ्य और शिल्प पर प्रकाश डालना यह एक लघु-शोध-प्रबंध का प्रमुख उद्‌देश्य है।

'अंधायुग' गीतिनाट्य की विशेषताओं को स्पष्ट करना, 'अंधायुग' का कथ्य तथा उद्‌देश्य

पर एक नजर डालना। प्रस्तुत शोध प्रबंध का उद्देश्य है।

धर्मवीर भारती के 'अंधायुग' का भावपक्ष तथा कलापक्ष का तात्विक विश्लेषण करना भी इस शोध-प्रबंध का उद्देश्य है। 'अंधायुग' में चित्रित समस्याओं का चित्रण करना, समस्यामूलक नाटकों की सामान्य जानकारी तथा उसमें 'अंधायुग' का योगदान दर्शाना आदि लघु-शोध-प्रबंध का उद्देश्य है।

अनुसंधान से पूर्व उपस्थित प्रश्न :

प्रस्तुत शोध-प्रबंध का अध्ययन प्रारंभ करने के पूर्व भी विषय के संदर्भ में मेरे मन में निम्नलिखित प्रश्न उपस्थित हुए थे।

१) डॉ. धर्मवीर भारती के 'अंधायुग' इस गीतिनाट्य की वस्तुगत, कथ्यगत, विशेषताँए कौन-सी होगी ?

२) 'अंधायुग' नाटक का कथ्य क्या है ?

३) 'अंधायुग' नाटक का उद्देश्य क्या है ?

४) 'अंधायुग' का अनुभूति पक्ष/भावपक्ष और अभिव्यक्ति पक्ष/कलापक्ष क्या है ?

५) समस्या-मूलक नाटकों में 'अंधायुग' का क्या योगदान रहा होगा ?

विवेच्य नाटक के अध्ययन के उपरांत उक्त प्रश्नों के जो उत्तर प्राप्त हुए है उन्हें उपसंहार में दर्ज किया है। अध्ययन की सुविधा हेतु मैंने अपने लघु-शोध-प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित करके प्रस्तुत शोध-विषय का विवेचन-विश्लेषण किया है।

प्रथम अध्याय – डॉ. धर्मवीर भारती का व्यक्तित्व एवं कृतित्व :

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत डॉ. धर्मवीर भारती के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। इस दृष्टि से उनके व्यक्तितत्व के विभिन्न पक्ष जन्म, माता-पिता, बचपन, शिक्षा, आजीविका, अभिरूचियाँ, परिवार व्यक्तित्व की झलक प्राप्त सम्मान, आदि पक्षों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया गया है। साथ ही उनके कृतित्व के अंतर्गत उनकी समस्त कृतियाँ, काव्य उपन्यास, एकांकी, निबंध, नाटक, समीक्षा, कहानी, अनुवाद, पत्रकारिता, रिपोर्ताज, यात्रावर्णन आदि शीर्षक अंतर्गत सामान्य परिचय दिया गया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दर्ज किए गए है।

द्वितीय अध्याय – 'अंधायुग' गीतिनाट्य का वस्तुगत मूल्यांकन :

इस अध्याय के अंतर्गत धर्मवीर भारती जी के 'अंधायुग' इस गीतिनाट्य का वस्तुगत मूल्यांकन करते समय इसमें गीतिनाट्य का अर्थ-परिभाषाएँ, विशेषताएँ, गीतिनाट्य के तत्व, 'अंधायुग' में चित्रित विशेषताएँ आदि मद्दों की जानकारी सामान्य रूप में दी गई है। उसके बाद 'अंधायुग' के कथावस्तु की समीक्षा की गई है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किए है।

तृतीय अध्याय – 'अंधायुग' गीतिनाट्य का कथ्यगत मूल्यांकन :

प्रस्तुत अध्याय में गीतिनाट्य की कथ्यगत विशेषताएँ स्पष्ट की है। उसके बाद 'अंधायुग' का कथ्य है तथा उसका उद्देश्य बनाकर 'अंधायुग' नाटक का समग्र मूल्यांकन किया है।

चतुर्थ अध्याय – 'अंधायुग' गीतिनाट्य का शिल्पगत मूल्यांकन :

किसी नाटक की आलोचना करते समय हमें उसके भावपक्ष तथा कलापक्ष दोनों को देखना पड़ता है। इस दृष्टि से 'अंधायुग' में दोनों के परिप्रेक्ष्य में 'अंधायुग' नाटक का शिल्पगत मूल्यांकन इस अध्याय में किया है। पहले भावपक्ष को इस अध्याय में स्पष्ट किया है। कलापक्ष को स्पष्ट करते हुए उसमें भाषा, शैली, अलंकार, बिंब, प्रतीक विधान, छंद, मिथक, अभिनेयता, रंगमंचीयता आदि तत्वों की संक्षिप्त जानकारी दी गई है।

पंचम अध्याय – हिंदी साहित्य के समस्या–मूलक नाटकों में ''अंधायुग'' नाटक की देन :

प्रस्तुत अध्याय में समस्या-मूलक नाटक की परिभाषा, स्वरूप, लक्षण, विशेषताएँ आदि को स्पष्ट किया गया है। कुछ समस्या मूलक नाटकों की सामान्य जानकारी दी है। मुख्यत: 'अंधायुग' नाटक में चित्रित जो समस्याएँ है उनको विशेष रूप से स्पष्ट करते हुए उसके योगदान पर प्रकाश डाला है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किए है।

अंत में 'उपसंहार' में विवेच्य अध्यायों में प्राप्त तथ्यों के आधार पर निकाले गए निष्कर्ष दर्ज किए है। साथ ही साथ अंत में प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध के लिए समीक्षा ग्रंथों तथा सहाय्यक संदर्भ ग्रंथों की सूची दी है।

प्रस्तुत लघु शोध–प्रबंध की मौलिकता :

१. धर्मवीर भारती के 'अंधायुग' गीतिनाट्य के कथ्य और शिल्प पर किया गया पहला अनुसंधान है।

२. इसमें कथ्य और शिल्प दोनों पर विचार किया गया है।

३. इसमें चित्रित समस्याओं को विशेष रूप से स्पष्ट किया है।

४. कुछ समस्या मूलक नाटकों की सामान्य जानकारी दी गई है।

५. स्वातंत्र्योत्तर समस्या-मूलक नाटकों में डॉ. धर्मवीर भारती लिखित 'अंधायुग' गीतिनाट्य का मूल्यांकन करते हुए उसके योगदान को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

❊ ऋणनिर्देश :

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की संपन्नता का पूरा श्रेय में मेरे आदरणीय गुरूवर्य प्राचार्य डॉ. राजेंद्र शहा सर जी को देना चाहूँगा। उन्होंने अपना अनमोल मार्गदर्शन देकर इस लघु शोध-प्रबंध के बारे में उठनेवाली हर समस्याओं को सुलझाया और मुझे प्रेरणा देने का महत्वपूर्ण कार्य किया। अत: उनके मौलिक मार्गदर्शन के बिना यह शोध-कार्य असंभव ही था। इसलिए मैं उनके प्रति हमेशा कृतज्ञ रहूँगा।

शिवाजी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग अध्यक्ष आदरणीय गुरूवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण सर जी ने अपने कार्यभार की व्यस्तता के बावजूद मुझे अनमोल मार्गदर्शन किया हैं। इस लघु शोध-प्रबंध को लिखने के लिए प्रेरणा देने वाले मुधोजी महाविद्यालय, फलटण के हिंदी विभागाध्यक्ष श्री. रणवरे सर जी, घारगे मॅडम, धवडे सर इनका मैं सदा आभारी रहूँगा।

इस अनुसंधान कार्य की संपन्नता के आधार में मुझे प्रेरणा देने वाले परमपूज्य माता-पिता, हमेशा मित्र बनकर हौसला बढाने वाले मेरे भाई-बहन तथा मुझे हर वक्त सहायता करनेवाले मेरे एम्.फिल. के सभी मित्र इन सबके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

स्थान : फलटण

तिथि : 18-3-2007

(शोध-छात्र)

BPatange

(श्री. दत्तात्रय बाबुराव पतंगे)

“धर्मवीर भारती के ‘अंधायुग’ नाटक का कथ्य और शिल्प”

अनुक्रमणिका

अध्याय	अध्याय का नाम	पृष्ठ क्रमांक
प्रथम -	**डॉ. धर्मवीर भारती का व्यक्तित्व एवं कृतित्व**	3 से 16
1.1	डॉ. धर्मवीर भारती : व्यक्तित्व	
1.1.1	डॉ. धर्मवीर भारती : जीवन परिचय	
1.1.1.1	जन्म	
1.1.1.2	माता-पिता	
1.1.1.3	बचपन	
1.1.1.4	शिक्षा	
1.1.1.5	आजीविका	
1.1.1.6	परिवार	
1.1.1.7	व्यक्तित्व की झलक	
1.1.1.8	अभिरूचियाँ	
1.1.1.9	सम्मान	
1.1.1.10	मृत्यु	
1.1.2	डॉ. धर्मवीर भारती : साहित्य परिचय	
1.1.2.1	कवि भारती	
1.1.2.2	उपन्यासकार भारती	
1.1.2.3	कहानीकार भारती	
1.1.2.4	एकांकीकार भारती	
1.1.2.5	निबंधकार भारती	
1.1.2.6	नाटककार भारती	
1.1.2.7	अनुवादक भारती	
1.1.2.8	शोधकर्ता भारती	

1.1.2.9	समीक्षक भारती	
1.1.2.10	पत्रकार भारती	
1.1.2.11	रिपोर्ताज	
1.1.2.12	यात्रावर्णन	
	निष्कर्ष	
द्वितीय	**'अंधायुग' गीतिनाट्य का वस्तुगत मूल्यांकन**	17 से 30
2.1.1	गीतिनाट्य अर्थ- परिभाषाएँ	
2.1.1.1	गीतिनाट्य की वस्तुगत विशेषताएँ	
2.1.1.2	गीतिनाट्य के तत्व	
2.1.2	'अंधायुग' गीतिनाट्य की विशेषताएँ	
2.1.3	'अंधायुग' गीतिनाट्य की कथावस्तु की समीक्षा	
	निष्कर्ष	
तृतीय	**'अंधायुग' गीतिनाट्य का कथ्यगत मूल्यांकन**	31 से 43
3.1.1	कथ्य का अर्थ	
3.1.2	'अंधायुग' गीतिनाट्य का कथ्य	
3.1.3	'अंधायुग' गीतिनाट्य का उद्देश्य	
3.1.4	'अंधायुग' गीतिनाट्य का मूल्यांकन	
चतुर्थ	**'अंधायुग नाटक का शिल्पगत मूल्यांकन**	44 से 58
4.1.1	'अंधायुग' गीतिनाट्य का अनुभूति पक्ष / भावपक्ष	
4.1.2	'अंधायुग' गीतिनाट्य का अभिव्यक्ति पक्ष / कलापक्ष	
4.1.2.1	भाषा	
4.1.2.2	शैली	
4.1.2.3	अलंकार	
4.1.2.4	बिंब विधान	
4.1.2.5	प्रतीक विधान	

4.1.2.6 छंद
4.1.2.7 मिथक योजना
4.1.2.8 काव्यत्व और संगीतत्व
4.1.2.9 अभिनेयता
4.1.2.10 रंगमंचीयता

पंचम **'हिंदी साहित्य के समस्यामूलक नाटकों में 'अंधायुग' नाटक की देन** 59 से 81

5.1.1 समस्यामूलक नाटक की परिभाषा-स्वरूप
5.1.2 समस्यामूलक नाटक के लक्षण एवं विशेषताएँ
5.1.3 स्वातंत्र्योत्तर कालीन कुछ समस्यामूलक नाटकों की सामान्य जानकारी
5.1.4 'अंधायुग' नाटक में चित्रित समस्याएँ
5.1.5 समस्यामूलक नाटकों में 'अंधायुग' नाटक की देन
निष्कर्ष
* उपसंहार 82 से 87
* संदर्भ ग्रंथ सूची 88 से 93

प्रथम अध्याय
डॉ. धर्मवीर भारती का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.1	डॉ. धर्मवीर भारती : व्यक्तित्व
1.1.1	डॉ. धर्मवीर भारती : जीवन परिचय
1.1.1.1	जन्म
1.1.1.2	माता-पिता
1.1.1.3	बचपन
1.1.1.4	शिक्षा
1.1.1.5	आजीविका
1.1.1.6	परिवार
1.1.1.7	व्यक्तित्व की झलक
1.1.1.8	अभिरूचियाँ
1.1.1.9	सम्मान
1.1.1.10	मृत्यु

1.1.2	डॉ. धर्मवीर भारती : साहित्य परिचय
1.1.2.1	कवि भारती
1.1.2.2	उपन्यासकार भारती
1.1.2.3	कहानीकार भारती
1.1.2.4	एकांकीकार भारती
1.1.2.5	निबंधकार भारती
1.1.2.6	नाटककार भारती
1.1.2.7	अनुवादक भारती

1.1.2.8 शोधकर्ता भारती
1.1.2.9 समीक्षक भारती
1.1.2.10 पत्रकार भारती
1.1.2.11 रिपोर्ताज
1.1.2.12 यात्रावर्णन
निष्कर्ष